: षष्ठम् अध्याय :

-----: अंधाकुआँ और लोकगीत :-----

अंधाकुआँ नाटकमें कुलमिलाकर दो लोकगीत है ---- व्दितीय अंकमें पार्श्व-भूमिमें के रूपमें कजली गाती हुई स्त्रियाँ सुनाई देती है --- वह लोकगीत इस प्रकार है --------

"गगरी पै कगवा, अरे बोलन लागे।
छोटे नेबुलवा के पातर डरिया "
तापे सुगनावाँ, अरे डोलन लागे।
पोखरा में हंस बोलो, तलरीमें कुरिला
बिरहा की रतिया, अरे सालन लागे।
खुलि जाय अँचरा, मसकि जाय आँगिया
बाजू पै बंदा, अरे झूमन लागे।
उडि जा तू कागा, सैयाँ के देसवाँ
कजरी के बनवाँ, अरे पलन लागे।" [पृ.६४-६५]

तीसरे अंकमें चक्कीका गीत स्त्रियाँ गाती है ---

"हमरे बबैया जू के सात बेटौना रे ना,
रामा सातो के चँदा बहिनियाँ रे ना।
सातो भाईयवे चले परदेशवा रे ना,
रामा चँदा पकरि रोवै गोडवा रे ना।
बरहे बरिसवा पै लौटे सातो भैइया रे ना,
रामा बहिनी के लावै चंदा हरवा रे ना।

मोरे पिछरवा पँडित भैइया मितवा रे ना,
भैइया चँदा के सोधा से गवनवा रे ना।

पहिले-पहल चँदा आयी है गवनवा रे ना,
रामा उनके सामी मागे से पनिया रे ना।

पनियाँ अडोरतु धालेके चँदा के हरौवा रे ना,
रामा कहाँ बहुरि पाइव चँदा हरवा रे ना।
हमरे बबैया जू के सात बेटौवा रे ना,
सामी ओई दिहे चँदा हरौवा रे ना।
सामी न विसास करे चँदा के बतिया रे ना,
रामा चँदा से मागे लै किरियवा रे ना। " (पृ० ८३-८४)

सूका -- " तब!"

औरत -- " तब क्या ? तब है कि --(गाती हुई)
" मुँहवा रुमलिया दे के रोवे चँदा समियाँ रे ना,
~~सतु इतनी देखिकर भैइया बढ़ैता रे ना~~ ,
रामा मोरा सती मोका छोडि जै है रे ना।
सतु इतनी देखिकर भैइया बढ़ैता रे ना,
रामा बहिनी जोग डँडिया फनावे रे ना।
यक बन गईली दुसर बन गइली रे ना,
रामा तिसरेमें मिली बन-तपसिन रे ना।
बहियाँ पकरि समुझावे बन - तपसिन रे ना,
बेटी सामी कर धारो न गुजहवाँ रे ना।" (पृ० ८६)

इस तरहके लोकगीत अँधाकुआँ में हैं।

लोकतत्त्वोंके अंतर्गत लोकगीतोंका महत्त्व अनन्य साधारण है। उपर्युक्त लोकगीतोंके संबंधी विशेषताएँ -----

अंधाकुआँ नाटकमें नाटककार लक्ष्मी नारायण लाल व्दारा प्रयुक्त उपर्युक्त दोनों लोकगीतोंकी उत्पत्तिके संबंधमें कुछ नहीं कहा जा सकता | तथा भी हम जाननेमें असमर्थ हैं कि इन लोकगीतोंके रचयिता कौन है ? उनका नाम ?

इन प्रश्नोंके उत्तर हमारे पास नहीं हैं | ऐसा नहीं कि केवल अंधा--कुआँ के इन दो लोकगीतोंकी ही ऐसी स्थिति है |

उपर्युक्त प्रश्नोंके उत्तर न दे सकनेका कारण है लोकगीतोंका स्वरूप | लोकगीतोंका स्वरूप-ही कुछ ऐसा होता है कि लोकगीतोंके संबंधमें सही सही बातें जान सकनेमें हम असमर्थ होते हैं |

लोकगीतोंका स्वरूप ------

(१) लोकगीत मौखिक होते हैं | परंपरासे एक पीढीसे दूसरी पीढीतक उनका प्रवास होता है | इसके कारण उनमें कुछ परिवर्तन, लोप या नये शब्दोंका आ जाना सहज स्वाभाविक होता है | लेकिन यह भी वस्तुस्थिति होती है कि इस तरह बाहरी ढाचेमें चाहे कितना परिवर्तन क्यों न हो ? उनकी आत्माको धक्का अधिकतर नहीं लगाया जाता |

(२) लोगीतोंके गीतकार, कवि कौन होते हैं ?

यह भी जान लेनेका साधन हमारे पास नहीं हैं |

लोकगीतकार अनाम, प्रसिध्दि विन्मुख होते हैं | इसलिए लोकगीतोंके गीतकारका नाम नहीं होता और दूसरी महत्वपूर्ण बात यह होती है कि लोकमें, समुदायमें आनेपर उस लोकगीतकारके नामका अस्तित्व विलय हो जाता है | लोकगीतके रूपमें वह अमर हो जाता है | इसलिए शायद नामका आग्रह न रखता हो | लोकगीतोंके संबंधमें तीसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि लोकगीत समाजकी संपत्ति मानी जाती है |

इसलिए लोकगीतपर किसी व्यक्तिका हक न होकर वह सबका हो जाता है। व्यष्टिसे समाष्टिका हो जाना लोकगीत का ही नहीं समस्त लोकतत्त्वोंका गुणधर्म है।

इन्हीं कारणोंसे लोकगीतोंके सृजनकी तिथिको खोज निकालना किसी भी अन्वेषकके लिए संभव नहींहै। अंधाकुआंके आलोच्य लोकगीत भी इस बातके लिए अपवाद नहीं है।

लोकगीतोंकी उत्पत्तिके संबंधमें डा॰ श्याम परमारका कथन है -----

" मानवके कंठसे जो विगत भाव कभी निकले थे, कालांतरमें वे लोकगीत बन गये। " [1]

इस तरह लोकगीतोंके संबंधमें अनुमान, अंदाज व्यक्त करनाही हमारे हाथमें है। क्योंकि अतीत रहस्य युगोंके अनावरणके पश्चात भी लोकगीतोंकी उत्पत्तिके क्षणोंको किसी काल विशेषकी सीमामें नहीं बांधा जा सकता। इसलिए उपर्युक्त लोकगीतोंका रचनाकाल, रचनाकारके संबंधमें निश्चितताके साथ कुछ जानकारी प्राप्त नहीं हो सकती।

लोकगीतोंके निर्माता अजंता, एरोलाके कलाकारोंकी तरह कई हैं पर अज्ञात है, व्यक्तिशून्य और निर्वैयक्तिक है। यह हुई रचनाकारके संबंधमें संक्षिप्त बात, रचनाकालके संबंधमें भी आर विलियम्स का कथन देखना युक्तियुक्त होगा, " लोकगीत न तो पुराने हैं और न नये। ये जंगलके उन वृक्षोंके समान है, जिनकी जड़ें तो धरतीमें दूरतक धंसी होती है किंतु जिनमें नित्य नयी नयी कलियाँ, पल्लव और फूल लगने लगते हैं। " [2]

उपर्युक्त कथन कई दृष्टियोंसे महत्वपूर्ण है। इस कथन का प्रारंभिक भाग रचनाकाल पर प्रकाश डालता है। व्दितीय भागमें लोकगीतोंका स्वरम- जंगलके वृक्ष--इससे स्पष्ट हुआ है। भलेही रचनाकाल और रचनाकार के संबंधमें स्पष्टतासे न भी कहे। लेकिन संक्षेपमें हम यह तो निश्चितताके साथ

---

(१) भारतीय लोकसाहित्य --डा॰श्याम परमार--पृ॰५३

(२) इनसाइक्लोपीडिया आफ ब्रिटेनिका--भाग९--पृ॰४४५

कह सकते हैं,

लोक का गीत = लोकगीत है।

इसमें गीत व्दारा लोक की अभिव्यक्ति होती है। लोकतत्त्व और लोकगीत में इसलिए बहुत नजदीकी रिश्ता बन जाता है।

अबतक हमने लोकगीतके संबंधमें आवश्यक प्राथमिक जानकारी लेली अब हमे इन विशेषताओंके आधारपर अंधाकुआंके दो लोकगीतोंका परीक्षण, अध्ययन करना है।

उपर्युक्त दो लोकगीतोंकी अलग-अलग व्याख्या, परीक्षण करनेसे पहले यहाँ लोकगीतोंके संबंधमें दो महत्त्वपूर्ण दृष्टिकोणोंका उल्लेख करना जरुरी है।

(१) लोकगीतोंकी दृष्टिसे अध्ययन।

(२) नाटकमें आनेकी दृष्टिसे लोकगीतोंका अध्ययन।

यहाँ व्दितीय भाग प्रथम भाग की अपेक्षा गौण है। नाटकमें लोकगीत उधृत किए गये हैं, इसलिए महत्त्वपूर्ण है ? नाटककी कथावस्तुसे और लोकगीतोंकी योजनामें नाटककारकी सफलता ? उपर्युक्त लोकगीत किसी पात्र की मनःस्थितिपर प्रकाश डालनेमें समर्थ है ? तो क्यों ? नहीं ? तो क्यों ? इन लोकगीतोंके व्दारा नाटकने कुछ नया मोड लिया है ? नाटकमें ये योग्य स्थानपर हैं ? तो क्यों ? नहीं, तो क्यों ?

इस प्रकार के प्रश्न महत्त्वपूर्ण होते हुए भी यहाँ इतना महत्व नहीं रखते जितना महत्व लोकगीतोंका स्वरुप जाननेका महत्व रखता है। क्योंकि यहाँ लोकतत्त्व महत्त्वपूर्ण है न की नाटकके तत्व सबसे पहले उपर्युक्त दो लोक-गीतोंमेंसे क्रमशः प्रथम और व्दितीय लोकगीतोंका समग्र परिचय यहाँ देखना है ----

अंधाकुआँ का प्रथम लोकगीत प्रस्तुत है ।

"गगरी पै कगवा, अरे बोलन लागे ।
छोटे ने बुलवा के पातर डरिया
तापे सुगनवाँ, अरे डोलन लागे ।
पोखरा में हंस बोले, तलरी में कुरिला
बिरहा की रतिया, अरे सालन लागे ।
खुलि जाय अँचरा, मस कि जाय अँगिया
बाजू पै बंदा, अरे धमने लागे ।
उडि जा तू कागा, सैयाँ के देसवाँ
कजरीके बनवाँ, अरे फूलन लागे ।" (पृ.६४-६५)

दूसरे अंककी सूचना नाटककारने इस प्रकार दी है ----

" सावन मास है, और नागपंचमी की रातका पहला पहर है, अभी गाँव में स्थान-स्थान पर, कई पेडोंपर झूले पडे है, और सारा गाँव सावनकी पंचमी मना रहा है ।

इसें धरके बिलकुल पिछवाडे आम के पेड पर डले हुए झूले में मुख्यतः गाँव की स्त्रियाँ झूला झूल रही हैं । " (पृ.४७)

लडकियोंके गानेका स्पष्ट स्वर सुनाई देता है । उपर्युक्त लोकगीत "कजली" है ।

लोकगीतोंके अनेक प्रकार हैं ----

(१) ऋतुगीत । (२) क्रियागीत । (३) संस्कारगीत । (४) मेलागीत । (५) व्रतसंबंधी गीत । (६) व्यवसायसंबंधी गीत ।

लालके अंधाकुआँ नाटकमें एक और दो क्रमांकके एकेक लोकगीत है | क्रमश:
(१) ऋतुगीत और (२) क्रियागीत |

(१) ऋतुगीत = इसके नामसे ही पता चलता है कि इस तरहके लोकगीतोंमें अधिकांश लोकगीत किसी न किसी ऋतु से संबंधित हुआ करते हैं | वर्षा, वसंत आदि ऋतुओंके आनेपर लोकजीवनमें नवीन उल्लास उत्पन्न होता है और उस उल्लास की अभिव्यक्ति ऋतुगीतोंमें पाई जाती हैं | क्रमश: विभिन्न ऋतुगीत ये हैं---

(१) चैता या घांटो,|
(२) कजली |
(३) फगुआ या फाग |
(४) चौताल |
नामक विविध ऋतुगीत हैं |

विभिन्न ऋतुगीतोंमें "कजली", "कजरी" लोकगीतका विशेष स्थान एवं महत्त्व है | उसी तरह लोकसमाजका प्रिय तथा महत्वपूर्ण लोकगीत कजली है |

कजली नामकरण ----

कजली सावनके मनभावन महिनेमें उत्तर प्रदेशमें स्त्रियोंव्दारा गायी जानेवाली अतिप्रचलित गायन शैली है | "कजली ", "कज्जली " या "कजरी " शब्द संस्कृत शब्द कज्जालसे बने हैं जो बहुअर्थी हैं | किंतु मुख्यरूपसे इसका अर्थ कालिमा से संबंधित है | जिसके काजल, अंजन, वर्षाकी काली घटा, कजली देवी अर्थात् विंध्याचल की काली देवी, कजली का त्योहार या उत्सव, कजली रागिनी का गीत | ऐसे कजली के अनेकाने अर्थ हैं |

लोकगीतको कजली नाम क्यों पडा इसपर भी अनेक मतप्रवाह है---
(१) श्रावण मास की शुक्ल पक्षकी तीज -तृतीया -जिसे " कजली तीज "

कहते हैं । इसलिए श्रावणमासके केवल तीज को कजली न कहकर संपूर्ण सावन मासमें जो जो लोकगीत गाये जाते हैं उनको ऋतुगीत के अंतर्गत कजली कहा जाने लगा।

(२) डा॰ ग्रियर्सन ने भी कजली के नामाभिधान संबंधी भारतेंदुका मत -----

दंतकथाके आधारपर प्रकट किया है कि " मध्यभारतके परोपकारी राजा दादू राय की मृत्युपर वहाँ की स्त्रियोंने अपना दुख "कजरी " नामक एक नये गीत की तर्ज व्दारा प्रकट किया, जो बादमें " कजली" कहलाया।" [१]

लेकिन कजली में किसी तरह "शोक" या दुखपूर्ण उद्गार नहीं है, वह तो प्रेमका प्रसन्नताका गीत है। यह देखकर यह नामकरण उचित नहीं प्रतीत होता।

(३) भारतेंदु कजली नामकरण के संबंधमें बताते हैं कि दादू राय के राज्यमें कजली वन नामक वन था जिसके कारण इसका नाम कजली पडा। " [२]

उपर्युक्त दूसरा और तीसरा मत स्वीकार नहीं किया जा सकता क्यों कि दोनोंके दोनों मत प्रमाणरहित हैं।

केवल प्रथम मत की ही तरह मत प्रसिध्द कजली रचयिता मिर्जापुरी प्रेमधन ने दिया है --- जैसे वसंतोत्सव के त्योहार का नाम होली दहन के कारण होली पडा ऐसेही सुप्रसिध्द त्योहार कजली तीज के रहनेसे इस बरसाती उत्सव का नाम भी कजली कहलाया और जैसे होलीमें गाये जाने योग्य गीतोंका नाम होली पडा उसी प्रकार कजली के अवसर पर गाए जानेवाले गीत कजली नामसे विख्यात हुए। [३]

इसकी भारतेंदुजीने पुष्टी करते हुए कहा है कि भादोंकी शुक्ल पक्षकी तीज का नाम कजली तीज है। इसदिन खूब कजली गाई जाती है।

---

(१) लोकरागिनी -- पृ॰ ७४

(२) लोकरागिनी ---- --"--

(३) प्रेमघन सर्वस्व व्दितीय भाग --

अताएव इससे भी कजली का संबंध हो सकता है। भालेही भारतेंदुने "तीज" कहा

अबतक हमने कजलीके नामकरण के संबंधमें देखा अब कजलीके स्वरूपपर भी थोडासा प्रकाश डालेंगे ----

" कजली " लोकगीत पूर्णतया लोक शैली-ग्रामीण नारियों व्दारा गाया जानेवाला एक गीत प्रकार है एक गीत शैली है। जो सावनके महिनेमें झूला झूलते वक्त स्त्रियोंव्दारा गायी जाती है।

"" कजली गानेका समय ------- रात्रिका भोजन आदिसे निवृत्त होकर, सारा कामकाज खत्म होकर, निर्विघ्न होकर रातके कजरारे अंधकारमें ये अपनी कजलियाँ छेडती हैं और वह भी जब सावनमें काले काले बादल आकाशमें घिरे रहते हैं, रात्रिका समय है, झूला झूलती हुई स्त्रीके मुखसे कजली अनायासही बाहर निकलेगीही।

लेकिन इसके लिए थोडीसी प्राथमिक तैयारी करनी पडती है और वह यह सावनके महिनेमें, प्रत्येक गाँवमें --- बाग या किसी तालाबके किनारे -झूले लगाये जाते हैं, जिनपर गाँवकी स्त्रियाँ कजली गाती हुई झूला झूलती हैं।- इन झूलोंको लगानेके लिए सुंदर काठके चौकोर खंडकी आवश्यकता होती है। इसी चौकोर खंडको रंगीन रस्सीसे बाँधकर किसी पेड की शाखासे उसे लटका दिया जाता है। इसी सुसज्जित झूलेपर बैठकर स्त्रियाँ कजली गानेका और झूला झूलनेका समन्वित रूपमें आनंद उठाती है। एक या दो स्त्रियाँ झूलेपर बैठी रहती है और कुछ स्त्रियाँ झूलेके दोनों ओर खडी होकर उन्हें जोरसे झटका देकर खिलाती हैं, जिसे "पेग बढना" कहते हैं। इस प्रकार सावनमें झूला झूलनेका और साथही कजली गानेका दृश्य बडा सुहावना होता है। लेकिन कजली गाने के लिए किसी वाद्य, साज-बाज की मदद नहीं लेती। झूलेपर बैठी और झूला देनेवाली सभी सम्मिलित स्वरोंमें कजली गाती है। इनका स्वरूप थोडेमें सामूहिक, सार्वजनिक हैं।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

कजलीका वर्ण्य-विषय ----

कजलीका वर्ण्य विषय प्रेम है । शृंगारके संयोग तथा वियोग दोनों ही पक्षोंका इनमें सुंदर वर्णन मिलता है ।

फिर भी कजली का वर्गीकरण तीन विभागोंमें किया जाता है।

(१) प्रथम कोटीमें वे कजली ऋतुगीत आते हैं जिनमें सावनकी हरियाली, मेघोंकी घटा, रिमझिम ,रिमझिम पडनेवाली फुहार तथा बिजली चमकनेका वर्णन होता है ।

(२) दूसरे उन कजली ऋतुगीतोंका समावेश किया जाता है--जिनमें दांपत्य जीवनका चित्रण मिलता है ।

(३) तीसरे में उन कजली ऋतुगीतोंका समावेश किया जाता है--- जिनमें स्त्रीकी मायके जानेकी साध वर्णित होती है, उसे मायकेका स्मरण आता है ।

अंधाकुआँ नाटकमें जो पहला लोकगीत है वह कजली ऋतुगीतके अंतर्गत आया है और उपर्युक्त दूसरे कोटीका वर्ण्य-विषय आलोच्य कजलीका है ।

आलोच्य कजली इस तरह है """"""

गगरी पै कगवा, अरे बोलन लागे।
छोटे नेबुलवा के पातर डरिया
तापे सुगनवाँ, अरे डोलन लागे ।
पोखरामें हंस बोले, तलरीमें कुरिला
बिरहा की रतिया, अरे सालन लागे।
खुलि जाय अंचरा, मसकि जाय अँगिया
बाजू पै बंदा ,अरे झूमने लागे ।
उडि जा तू कागा, सैयाके देसवा

कजरीके बनवाँ, अरे फूलन लागे।

उपर्युक्त <u>कजलीका अर्थ</u> -----

लोकनायिका गगरी लेकर पानी भरलेके लिए गयी हुई है। उसकी नजर गगरीपर के कौओंपर जाती है तो उसे ऐसा लगता है कि गगरीपरका कौआ कुछ बोल रहा है।

उसे दिखाई देता है कि छोटे नेबुलवा, नीम के वृक्ष की डालीपर बैठा हुआ शुक, तोता अत्यानंदसे डोल रहा है, झूम रहा है।

तब उसकी नजर नीले नीले तालाबमें सपेद हँसकी सुमधुर बोली की ओर जाती है। और तलैयाके कुरिला, कुमुदिनी, कमलिनी जैसे खिले पुष्पोंकी ओर सहजतया ध्यान आकृष्ट हो जाता है।

इस प्रकार लोकनायिकाने अनुभव किया कि सारी प्रकृतिमें सावनका, मदनका संचार हो गया हैं। प्रकृतिमें मादक वातावरण छा गया है। प्रकृति प्रणयका आस्वाद ले रही है।

तब लोकनायिकापर प्रकृतिका उददीपन रूपमें असर हो जाता है। उसके मनमें भी अपने सैयाँ के लिए प्रेमभावना उत्पन्न होती है। और इसलिए बड़े सैयाँके बिना वह विरह महसूस करती है। फलस्वरूप उस विरहिणीको रातमें नींद नहीं आती।

उसके सिरपरका आँचल बार बार कंधोपर गिर जाता है। लोकनायिकाके यौवनका भार अधिक हो जानेके कारण उसकी अँगिया, चोली भी फूटने लगी है।

विरहके कारण लोकनायिका इतनी दुबली पतली हो गई है कि भुजदंडोंपर पहले ठीक बैठनेवाले बाजूबंद विरहे कें कारण ढीले पड गये हैं।

तब कौअेपर उसकी दुबारा नजर जाती है और वह उसे कहती है कि कगवा ! तू उड जा ! और सैयाके देशमें जाकर उन्हें खबर करना कि ऋतुराज वसंत के आगमनपर कजरी के बन यौवनावस्थामें आकर फूलने लगे हैं। अब समय आ गया है कि तुम्हारी सजनीके शरीरपर भी वसंत का आगमन हो गया है। इस-लिए तुम्हें तुम्हारी सजनीके पास लौटनेका अब यही समय है।

उपर्युक्त कजलीके दो भाग हो सकते हैं।

(१) प्रकृति चित्रण। (२) विरहिणी की दशा।

(१) प्रकृति चित्रण के अंतर्गत ---- आनंदो-प्रसन्न, प्रकृतिका चित्र, कगवा, ने बुलवाके पातर डरिया, सुगनवा, पोखराके हंस, तहरीके कुटिला के उदाहरण आए हैं।

(२) विरहिणीकी दशा --- प्रकृति यहाँ आलंबन के रूपमें आयी है और उद्दीपन व्दारा विरहिणीकी दशाका सुंदर चित्रण अनाम रचनाकारने किया है।

उसकी पंक्तियाँ इस तरह की है ---

विरहाकी रतिया, अरे सालन लागे।
खुलि जाय अंचरा, मसकि जाय अँगिया।
बाजू पै बंदा, अरे डामन लागे।
उडि जा तू कागा, सैयाँ के देसवाँ
कजरी के बनवाँ, अरे फूलन लागे।

यहाँ कजरी " शब्दके तीन अर्थ हैं ---------

(१) कजली गीत। (२) कजरी वन। (३) कजरी या कजली नामक स्त्री।

यहाँ अनाम रचनाकारने अंतिम पंक्तिमें सांकेतिकताका स्पष्ट परिचय दिया है। लोकगीतोंपर जो आरोप लगाते हैं कि इनमें यथार्थता नहीं होती। लेकिन प्रस्तुत कजली लोकगीत अपवाद है और इसमें महाकाव्य जैसा सौंदर्य भरा पडा है। इसलिए लोकगीतकार प्रशंसाके पात्र है।

और नाटककार भी इसलिए प्रशंसा के पात्र है क्योंकि आपने नाटकमें योग्य जगहपर योग्य लोकगीत उध्दृत किया।

उपर्युक्त कजली अंधाकुआँके क्रमश: चार पात्र सुनते हैं वे हैं ----

(१) सूका। (२) राजी। (३) भगोती। तथा (४) नंदो।

कजलीका प्रभाव :--- (१) सूकाके संबंधमें दूसरे अंकके प्रारंभमें राजी बताती है, " कुछ ही देर की तो बात है। मैं भीतर चोकेमें गयी। वह पिछवाडे खडी होकर झूलेकी कजली सुनने लगी, फिर वहीं से न जाने कहाँ गायब हो गयी। "[१]

कजली सुनकर सूकापर पडा प्रभाव यहाँ वर्णित है कि वह कुएमें गिर जाती है।

(२) राजी जब कजली सुनती है तो सूकाके बारेमें उसके मनमें विचार आते हैं और उसे बहुत दुख होता है।

(३) भगोती जब यह कजली सुनता है तो इसपर इसका कोई भी प्रभाव नहीं पडता।

इसके संदर्भमें नाटककारने सूचना इस प्रकार दी है (गीत समाप्त होते-होते भीतर से भोजन करके भगोती निकलता है उसके पीछे-पीछे हुक्केपर चिलम रखे नंदो निकलती है।) "[२]

प्रतिक्रियास्वमें भगोती कहता है, " चाहे कोई खाय-पीये चाहे मर जाय, मुझे इसकी चिंता नहीं। "[३]

---

(१) अंधाकुआँ--लक्ष्मीनारायण लाल -- पृष्ठ-४७
(२) ---"----- -----"------- -- पृष्ठ-६५
(३) ---"----- -----"------- -- पृष्ठ-६५

(४) नंदोपर भी इस कजलीका कोई प्रभाव वर्णित नहीं है |

संक्षेपमें चार पात्रोंमेंसे दो पात्रोंपर कजलीका प्रभाव पडता और दो पर नहीं पडता --इसका अर्थ है कि दो के पास भावुक हृदय है और दो के पास नहीं है | इसमें कजलीका महत्व नकारा नहीं जा सकता |

क्रियागीत :---- इन्हें श्रम-गीत भी कहा जाता है | इनके अंतर्गत चक्की चलाते समय गानेवाले गीत, खेतोंमें कार्य करते समय गानेवाले गीत और चरखा चलाते समय गानेवाले गीतोंका समावेश हो जाता है |

क्रियागीत, श्रमगीत गानेके पीछे उददेश्य यह होता है कि गीत गा गाकर श्रमका -चक्की चलानेका, खेतोंमें कठिन कार्य करनेका, और चरखा चलानेका - श्रम परिहार हो सके | ~~तबीयत भुलवानेके~~ इस लिए यह क्रियागीत गाया जाता है |

इस तरहके क्रियागीत गानेके पीछे मनोवैज्ञानिक कारण यह होता है कि गीत गानेमें ही मन लगानेके कारण श्रमका एहसास कम होता है, चाहे वह पुरुष हो या स्त्री |

इस तरहका श्रम-गीत अंखाकुआंके तीसरे अंकके प्रारंभमें सुनाई देता है | यह श्रमगीत चक्की चलातेवक्त एकही स्थानपर ग्रामीण स्त्री बैठकर गाती हुई सुनाई देती है | चक्कीके गीत "जंतसार" के नामसे भी जाने जाते हैं |

ये चक्की संबंधी गीत ऐकांतिक भी होते है और सामूहिक भी होते हैं |

वर्ण्य विषय :---- एक ही स्थानपर बैठकर चक्की चलाते समय जो गीत गाये जाते हैं -- उनके विषय अनेक होते हैं | फिर भी परिवारसे संबंधित होते हैं | किसी गीतमें स्त्रीका करुण, क्रंदन, वंध्या नारीकी मनोवेदना, विरहिणी-का व्याकुलता, सासके व्दारा बहुको दी जानेवाली नारकीय यातना, पतिव्दारा

पत्निपर संदेह आदि चक्कीके गीतोंके, जंतसार गीतोंके विभिन्न विषय हुआ करते हैं।

स्वरूप :-- "कजली" लोकगीत जैसे सामूहिक रूपमें गाया जाता है उसी तरह जंतसारका गीत सामूहिक रूपमें भी और ऐकांतिक रूपमें भी गाया जाता है।

आलोच्य कृतिके तृतीय अंकके प्रारंभमें गाया गया चक्की गीत ऐकांतिक क्रियागीत के अंतर्गत आया है क्योंकि इसतरह की स्पष्ट सूचना नाटककारने तृतीय अंककी प्रारंभमें दे दी है, " दुइदरेमें चक्की चल रही है और उसकी चालके साथ ही साथ पीसती हुई औरत का गीत सुनाई पडता है। " (पृ. ८२)

अंधाकुआँ का लोकगीत प्रस्तुत है ---

"" हमरे बबैया जू के सात बेटौना रे ना,
रामा सातौके चंदा बहिनियाँ रे ना।
सातौ भाईयवे चले परदेशावा रे ना,
रामा चंदा पकरि रोवै गोडवा रे ना।
बरहे बरिसवा पे लौटे सातौ भैइया रे ना,
रामा बहिनी के लावै चंदा हरवा रे ना।
मोरे पिछवडा पंडित भैइया मितवा रे ना,
भैइया चंदा के सोधो से गवनवाँ रे ना।
पहिले-पहल चंदा आयी है गवनवाँ रे ना,
रामा उनके सामी मागे से पनियाँ रे ना।
पनियाँ ओरत झलके चंदा के हरौवा रे ना,
रामा कहाँ बहुरि पाइव चंदा हरवा रे ना।
हमरे बबैया जू के सात बेटौवा रे ना,
सामी ओई दि है चंदा हरौवा रे ना।

सामी न विसास करे चँदा के बतिया रे ना,
रामा चँदा से मागे लै किरियवा रे ना। (पृ. ८३,८४)

सूका ------"तब ?"

औरत ------"तब क्या ? तब है कि ---- (जँतती हुई)

मुँहवा रूमलिया दै के रोवै चँदा समिया रे ना,
रामा मोरा सती मोका छोडि जै हैं रे ना।

सट्ठ इतनी देखिकर भइया बढैता रे ना,
रामा बहिनी जोगु डँडिया फनावै रे ना।
यक बन गइली दुसर बन गइली रे ना,
रामा तिसरेमें मिली बन-तपसिन रे ना।
बहियाँ पकरि समुझावै बन-तपसिन रे ना।
बेटी सामी कर टारौ न गुनहवा रे ना। (पृ. ८६)

उपर्युक्त श्रमगीत-जंतसार यह ऋतुगीत -कजली की तुलनामें अपेक्षाकृत लंबा इसलिए बन गया है क्यों कि संक्षिप्त रूपमेंही क्यों न हो उपर्युक्त जंतसारमें ---- कथा वर्णित है। इसलिए इसे " लोकगाथा गीत" की संज्ञा भी उसके आकार और कथा के कारण दे दी जाती है। फिर भी उसकी आत्मा क्रियागीत --जंतसार की ही है।

जिस तरह कजली झूला झूलते वक्त अनायासही कंठसे फूट पडती है। उसी तरह चक्कीके घार-घार की सुमधुर ध्वनिके साथही जंतसार के गीत सुनाई देते है।

इस समय चक्कीकी घार घार यह ध्वनि जंतसारके लिए वाद्य का काम करती है। और जंतसार की स्वरलहरी भी वातावरणको जीवंत कर देती है। ऐसा कहे तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है।

ऐसे जीवंत वातावरणमें जंतसारमें एकाद विषय छिड ही जाता है-------

आलोच्य कृति अंधाकुआंमें भी उपर्युक्त जंतसार हमें सुनाई देता है -----

उपर्युक्त जंतसार का अर्थ -----

उपर्युक्त जंतसार का अर्थ देखानेसे पहले एक बातकी ओर ध्यान देना चाहिए कि इस जंतसारके दो विभाग है। प्रथम विभाग का अर्थ इस प्रकार है ---------

हमारे पिताजी के सात बेटे हैं,
और सातों भाइयोंकी चंदा नामकी बहन है।
सातों भाई जब परदेश जाने लगते हैं,
तब चंदा सातों साईयोंके पैर पकडकर रोने लगती है।

बारह बरसों बाद जब चंदाके सातों भाई लौटते हैं, तब अपनी प्यारी बहनेके लिए वे चंद्रहार ले आते हैं।

तब पंडित (तोता, शुक) बताता है कि
हमारे पिछवाडेमें जो सोधो नामक मितवा है,
उनके साथ चंदा की शादी हो गयी है। गौना रचाया
गया है।

पहली बार चंदा गवनेमें, ससुराल आयी है। चंदाके स्वामी - "सोधो" चंदासे पानी मांगते हैं, पानी देते समय चंदाका हार झलकता है। हे राम! ऐसा चंद्रहार बहूने -चंदाने कहांसे पाया ?

तब चंदा बताती है कि हमारे पिताजीके सात बेटे हैं, हे स्वामी! उन्होंने ही यह चंद्रहार मुझे दिया है।

ऐसा बतानेपर भी चंदाका स्वामी-सोधो-चंदाकी बातका

करता है, और चंदासे शपथ लेनेके लिए कहता है।

(थोडेमें चंदाका पति उसके सत् चरित्राकी परीक्षा कराना चाहता है।)

इतना गाना गाकर ऊँधाकुआँ नाटककी चक्की चलानेवाली औरत महँदेई बुआके घरसे उधार लाए हुए सेरभर गेहूँ समाप्त होनेके कारण चक्की चलाना और गीत गाना बंद कर देती है।

"लेकिन सूका उसे गीत पूरा करनेके लिए कहती है। उसके बाद चंदा का क्या हुआ ? इसके बारेमें सूकाके पूछनेपर औरत बताती है,

"" कि चंदाको सुसरालमें अपने सत् की परीक्षा देनी पडी क्योंकि सास-सुसर, देवर-ननद को कौन कहे, जब उसका पति ही संदेह कर रहा था कि वह चंदा का हार असत् का था। तब लोहारसे धरमकी कडाही बनवायी गयी। बढईने चंदन की लकडी तैयार की। तेलीने धरमका तेल दिया। चंदा नैहरसे अपने साथ एक सुगना लायी थी उसी सुगना को सारा संदेशा देकर चंदाने उसे अपने नैहर भेजा। उसके सातो बीरन आये। तेलसे खोलती हुई कडाही आग पर चढाई गयी, और उसके पास अग्निपरीक्षा देनेके लिए चंदा खडी हुई। उसे घेरकर सब बैठ --पति, सुसर, देवर और सातो बीरन। खौलती हुई कडाहीमें कूदनेसे पहले चंदाने आँचल पसारकर कहा, कि " हे आग गोसाँई ! अगर मैं अपने सामीकी सच हूँ तो हे धर्म की माता ! तू मेरे लिए जूड पाला हो जा, नहीं तो मुझे भस्म कर दे।" यह कहकर चंदा कडाहीमें कूद पडी। आग बुझ-गयी, सारा तेल पाला हो गया।" (पृ. ८५-८६)

सूका -- "तब।"

औरत -- तब क्या ? तब है कि (गाती हुई)

मुँहवा रूमलिया है के रोवै चंदा सभिया रे ना ....''

यहाँसे चक्की गीतका द्वितीय भाग, उत्तरार्ध शुरू होता है, जिसका अर्थ है कि -------

सत् चरित्राकी परीक्षा देनेपर चंदा मुँहपर रुमाल रखाकर कहती है,

हे रामा ! मेरा सत्-चरित्र मुझे छोडकर कभी भी नहीं जा सकता |

अपनी बहन सत् चरित्र है, यह देखकर सातों भाई वहाँसे चले गये |

तब चंदा, डोली सजाकर, जोगीन बनकर चली गई |

चंदा एक बन गयी, दूसरे बन गयी,

तीसरे बनमें चंदा को एक बन-तपसिन,

तपस्विनी मिली |

वन-तपस्विनी बाँह पकड करके चंदाको समझाती है, हे बेटी ! स्वामीके गुनाह को, अपराधको मनमें रखाना नहीं चाहिए |

संपूर्ण लोकगीतका अर्थ देखानेपर प्रस्तुत लोकगीतके संबंधमें अनेक महत्वपूर्ण बातें तथा विशेषताएँ दृष्टव्य हैं ------

महत्वपूर्ण बातें ---- (१) चंदा माता पिजा विहीन लडकी है |

(२) सातों भाई परदेश चले जाते हैं |

(३) इसके बीचमें चंदाकी शादी पिछवाडेके सोधासे हो जाती है |

(४) चंदाके भाई बारह बरसों बाद लौटते समय अपनी बहनके लिए चंद्रहार ले आते हैं | लेकिन धारमें चंदाकी अनुपस्थितिका कारण तोता बताता है, कि पिछवाडेके पंडित भैयासे चंदाकी शादी हो गई है |

(५) तब सातों भाई बहन चंदाको चंद्रहार सौंपते हैं। जिसे पहननेपर चंदाका पति चंदापर संदेह व्यक्त करता है।

(६) सत् परीक्षा देनेपर चंदा जोगन बनकर एक वनसे दूसरे वन चली जाती है जहाँ बन-तपस्विनी चंदासे उपदेश करती है।

विशेषताएँ --------

(१) भाई बहन में ममत्व।
(२) शुक व्दारा कथन।
(३) चंदा के पति व्दारा चंदापर संदेह।
(४) सत् चरित्राकी परीक्षा देना।
(५) प्रतिक्रिया रूपमें जोगन बनना।
(६) बन-तपस्विनी का उपदेश।

प्रस्तुत चक्की गीत की योजना अंधाकुआमें तीन दृष्टियोंसे स्वाभाविक लगती है --------

(१) देहातोंमें किसीके घर जाकर जातमें अनाज पीसना, गीत गाना ये तो दैनंदिन घटनाएं हैं।

(२) उपर्युक्त लोकगीत की चंदापर और सूकापर लिया गया संदेह इनमें साम्य है। इस दृष्टिसे भी लोकगीतका डा॰ लालने बडी खूबीसे उपयोग कर लिया है।

(३) तीसरी बात लोकगीत की तांत्रिकतासे संबंध रखती है। दो पद्योंके बीचमें गद्य भाग इसलिए आया होगा कि डा॰लाल को संबंधित पद्य उपलब्ध न हो गया हो। ऐसा होनेपर भी डा॰ लालने पद्य तथा गद्य का बहुत ही खूबीसे उपयोग

कर लिया है ।

इस तरह अंधाकुआ में दो लोकगीत आए हैं ।

उनकी क्रमशः

प्रकार, वर्ण्य-विषय, आकार तथा प्रभाव की तुलना--------

प्रथम लोकगीत ।	द्वितीय लोकगीत ।
(१) एक ऋतुगीत = कजली, सामूहिक गीत और एकही भागमें समाप्त ।	(१) एक क्रियागीत = चक्कीगीत, ऐकांतिक और दो भागोंमें समाप्त ।
(२) वर्ण्य विषय-प्रेम के अंतर्गत विरह ।	(२) वर्ण्य विषय-पतिका पत्निपर संशय, करुणारस ।
(३) आकारमें, छोटा, कथाका अभाव केवल वर्णन ।	(३) आकारमें अपेक्षाकृत लंबा, कथा के कारण लोककथागीत ।
(४) आलोच्य लोकगीत सुनकर सूकाका प्रतिक्रिया रूपमें कुएमें गिरना ।	(४) आलोच्य लोकगीत सुनकर प्रतिक्रियारूपमें नाटकको एक निश्चित दिशा मिलना ।

• • • • • •0 0 0• • • • • • •